REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2020

विषमता के प्रतिस्फोटक कवि नामदेव ढसाळ

आनंदा मारुती कांबळे
सहाय्यक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग, आनंदीबाई रावराणे कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
वैभववाडी, जि. सिंधूदूर्ग, महाराष्ट्र, 416810.

गोषवारा:

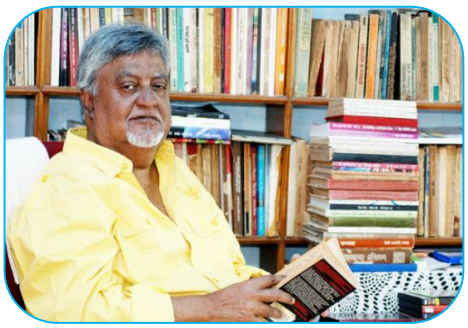

1960 के बाद मराठी कविता में सामाजिक चेतना की एक के बाद एक धारा सामने आई। पत्र–पत्रिकाओं में उत्तेजक कविताओं के साथ–साथ दलित कविता और कम्युनिस्ट कविता की धाराओं के माध्यम से स्थापित व्यवस्था के खिलाफ विरोध भी व्यापक रूप से व्यक्त किया गया था। जब नामदेव ढसाल ने कविता लिखना शुरू किया तो स्थापित जाति व्यवस्था और वर्ग व्यवस्था के खिलाफ एक बड़ा विद्रोह हुआ। 1956 के धर्म परिवर्तन ने जाति व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष को आकार दिया था, लेकिन साथ ही कट्टरता का एक नया बीज बोया था। देश में कम्युनिस्ट आंदोलन के साथ, शोषित वर्ग को क्रांति के नए क्षितिज दिखाई देने लगे। नए संघर्षों, नए आंदोलनों, नए सपनों, नई आकांक्षाओं, सक्रिय जाति, जाति–जाति–वर्ग के बीच, लेकिन हर स्तर पर, लेकिन कीचड़ भरे तल से उठकर विद्रोह और विद्रोह ने कवि के नमुने अपने पदार्पण में भर दिए।

परिचय:

नामदेव ढसाल के निधन से मराठी कविता के एक युग का अंत हो गया। विगत 40–45 वर्षों से निरंतर चीख–पुकार, कविता के सन्दर्भ में अनेक प्रश्न पूछने, अनेक सम्भावनाओं को जन्म देने वाला तूफानी व्यक्तित्व शांत हो गया है। एक व्यक्ति के रूप में उन्होंने जो लापरवाह जीवन जिया और एक कवि के रूप में उन्होंने जो अनूठी उपलब्धियाँ हासिल कीं, उनका अवलोकन करना इतना आसान नहीं है। विशेष रूप से उनके सामाजिक–राजनीतिक व्यक्तित्व, उनके आंदोलनों, उनके उग्र आंदोलनों और आश्चर्यजनक समझौतों, उनकी वीरता और सामान्य श्वेत वर्चस्ववादियों का विश्लेषण करके, जो दलित शोषकों के बारे में लगातार उत्सुक हैं, जिनके लिए उन्होंने संघर्ष किया है, यह निश्चित रूप से कहना मुश्किल है। इसलिए हमने इससे परहेज किया है और यहाँ केवल उनकी कविता को खोजने की कोशिश की है।

यदि हम महाराष्ट्र में पिछले 50 वर्षों के वर्ग और जाति संघर्षों के इतिहास को देखें, तो हम देखते हैं कि एक ओर सामूहिक चेतना के बोझ से दबे सामान्य मेहनती समाज और उसके नेताओं ने सती के विभिन्न रूपों को अपनाया है, उन्होंने जो आंदोलन किया है, उन्होंने जो शहादत स्वीकार की है। सभी आंदोलनों में सामान्य ज्ञान, स्वार्थ, जातिवाद की बातें करने, जातिवाद और धन शोषन के शिकार होने वाले नेताओं को व्यापक अपेक्षाओं पर आधारित आंदोलनों को सामान्य रूप देते देखा जाता है। पूँजीपति वर्ग का व्यावहारिक दर्शन और जाति–आधारित पदानुक्रम और हमारे वर्ग के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए किए गए प्रयास समझ में आते हैं, लेकिन उनके खिलाफ लड़ने वाले जनता के नेताओं के पास अपने स्वार्थी आंदोलनों के लिए एक खदान है।

यद्यपि उन्होंने अपने जुझारू व्यक्तित्व के कारण महाराष्ट्र के राजनीतिक क्षितिज पर अपना अस्तित्व दिखाया है, लेकिन वे एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जो भावनात्मक स्तर पर एक विशेष अवधि में सर्वहारा दलित वर्ग के मुक्ति संघर्ष के साथ काफी तालमेल बिठाते हैं। मन में निरंतर वर्ग चेतना के कारण उन्होंने काव्य के प्रति भी एक विशेष पवित्रता ग्रहण की है। इस लिहाज से 'मूर्ख म्हाता–याने डोंगर हलविले' संग्रह में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। हर कलाकार का एक वर्ग चरित्र होता है और हमारे पास यह इसलिए है क्योंकि हम सर्वहारा दलित वर्ग के कवि हैं। उनकी कविता इस वर्ग के सुख–दुःख गाती है, और व्यक्तिवाद को नकारकर सामूहिकता को गले लगाकर जीवन–प्रेमियों के इस वर्ग के साथ पूरी तरह से ईमानदार और एकतरफा है; ऐसा ढसाल सोचते हैं। उन्होंने कहा, हमारी कविता आज शोषक वर्ग द्वारा बनाई गई कविता से बिल्कुल अलग है। यह वर्ग के लाभ के लिए बनाई गई है और इसलिए हम कविता लिखते हैं, यानी हम राजनीतिक कार्य कर रहे हैं। 'चूँकि हमारी कविता एक वर्गीय हथियार है, इसलिए जिन लोगों की मेहनत से भारत का निर्माण हुआ है, वे हमारी अटूट आस्था हैं। हमारी प्रतिभा उनके दुख की जड़ को देखती है और उसे जख्मी कर देती है।' उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह उनकी कविता को एक मोड़ देता है। उन्होंने 'काव्य कम पद्यपंक्ती के सहारे दुनिया बदलने' की भाषा भी बोली है, उम्मीद है कि उनकी कविता सर्वहारा वर्ग को नफरत से जगाएगी।

ऐसा नहीं है कि उनकी पूरी काव्य रचना इसी भूमिका से हुई है। समुदाय की मजबूत भावना रखने वाले इस कवि की पूरी कविता व्यक्ति और समूह को बेहद व्यक्तिपरक तरीके से दर्शाती है। यही कारण है कि उन्होंने एक स्वतंत्र पहचान प्राप्त की है जो संपूर्ण मराठी कविता में सभी बाधाओं को पार करती है। 'गोलपीठा' कविताओं के पहले संग्रह में उनकी कविता एक अजीब नफरत से बनाई गई थी। इस संग्रह में मराठी काव्य के सारे लक्षण बिखर गए। उनके रास्ते में आई गोल चक्कर की दुनिया भी शानदार थी। गोलपीथा की प्रस्तावना में विजय तेंदुलकर दुनिया का वर्णन करते हैं, गोरों की दुनिया नो मैन्स लैंड की शुरुआत से, सफेद दुनिया की सीमाओं के अंत में शुरू होती है। यह रातों की दुनिया है, खाली या आधे भरे पेटों की, मौत की चिंताओं की, कल की चिंताओं की, शर्म और सनसनी की जलती हुई मानव शरीर की, बेवकूफों की, भिखारियों की, जेबकतरों की, बरंगे की, दादा और कब्रों की, तीर्थों की और सूली पर चढ़ाने की ... हिजड़ों की, रूमाल की। ढसाल ने इस दुनिया का एक नज़ारा रचा है, जिसके विवरण से रूहानी कड़ाही और किसी भी पल बहने वाले चिपचिपा खून... तस्करी, नंगे चाकू, अफीम...' ढसालों की यह धारणा किसी मध्यवर्गीय संज्ञा से उत्पन्न नहीं हुई है। वह उनकी हमदर्द नहीं है; आत्मज्ञान ही होता है। क्षुद्र, क्षणभंगुर सामान्य जीवन के साथ होने वाली क्रूर चीजों की धारणा पर किसी का ध्यान नहीं जाता है। यह उनके अंतर्ज्ञान में प्रवेश करता है। क्रोध की स्थिति में, मानसिक उथल–पुथल का बवंडर, विचारों का चक्र सुलझने लगता है। मन में व्यवस्था के प्रति क्रोध और अवमानना का भाव फूटता है। यही उनकी रासायनिक भावना है।

'गोलपीठा' संग्रह की भाषा बहुत रसीली है। यह अन्य दलित कवियों की भाषा से बिल्कुल अलग है। उनका रिश्ता कुछ हद तक लघु–पत्रिकाओं में कवियों के समान है। महानगरीय संवेदनशीलता का दंश इन कवियों ने भी महसूस किया है। उस दंश का जहर ढसालों के शरीर में और भी अलग हो गया है। 'फैमिली रूम्स', 'ऑक्टोपसच्या संघटित जनानखान्याकडे', 'तिच्यासाठी वास्तविकाची वाळवी' आदि जैसी कविताएँ अपरिचित जटिल इमेजरी के कारण अस्पष्ट हो गई हैं। डोबडी, डेडधायईपोटल, पांचट गवशी, मगरमच्छ पलिता, डिंग डांग धतिंग, गुपची शिगा, डेडाळे, डल्ली गुडसे, डिलबोळ आदि शब्दों वाली भाषा आम पारखी की समझ से परे है। उनकी कुछ कविताओं में शब्दों के प्रवाह की गति भी समझ में विघ्न डालती है। यद्यपि इन कविताओं में अश्लीलता एक विशेष वास्तविक जीवन दर्शन के लिए अपरिहार्य है, इसे अक्सर अतिशयोक्ति के रूप में देखा जाता है।

कवि परिवर्तन की प्रेरक जागरूकता व्यक्त करते हुए मूल अंग और परिपक्वता की शक्ति के साथ आगे नहीं बढ़ता है, लेकिन एक प्रतिक्रियाशील आवेग पर बार–बार भरोसा करता प्रतीत होता है। इसलिए, ऐसी सोच की प्रभावशीलता कम होती दिख रही है। जैसे–जैसे विद्रोह के शत्रुतापूर्ण रंग हर जगह फैले, भावनात्मक विस्फोट का प्रभाव प्राप्तकर्ताओं पर समग्र क्रांति के प्रभाव से अधिक था। 'मुर्ख म्हाता–याने डोंगर हलविले' संग्रह में यह अहंकारी भावुकता कम हो गई है। उसे 'गोलपिठया' के दायरे से परे दर्द की एक व्यापक दुनिया से परिचित कराया गया होगा। इस दौरान कवि की चेतना का दायरा भी व्यापक होता गया। इसलिए कविताओं का स्वरूप बदल गया। भावनात्मक अनुभव की तुलना में बयानबाजी और बयानों पर अधिक जोर दिया जाता है।

स्थापित सत्ता से संघर्ष का भी इस कविता पर प्रभाव पड़ता है। अपने 'कस्टडीतली कविता' में, वह अपने जेल अनुभव को दर्शाता है। उनके मन में साम्यवादी चेतना भी इस काल में बढ़ी हुई प्रतीत होती है। यह संग्रह साम्यवादी सिद्धांतों के कुछ रूपों को प्रकट करता है ताकि उन्हें आसानी से पाया जा सके; लेकिन कविता खो गई है। इन कविताओं को इस तरह से प्रस्तुत किया गया है कि इसे गद्य निबंध से ही माना जाना चाहिए। 'आपण आपल्या मार्गाने चालत रहावे लोक काहीही म्हणोत/हमें अपने रास्ते जाना चाहिए चाहे लोग कुछ भी कहें', 'हत्यारबंद', 'दोन रस्ते', कामगारबंधो', 'माझ्या काळया सावळया मादीस', 'पाब्लोच्या मरणाने आपण काय शिकलो?' जैसा कि कई कविताओं में, असमानता, शोषण और भ्रष्टाचार के रूप में, कवि वर्ग संघर्ष के दर्शन को अपने साथ या श्रमिकों के साथ संवाद के रूप में देखता है; लेकिन यह साफ नहीं है कि वह उन सभी से भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं।

इन सभी कविताओं में असंबद्ध बौद्धिक प्रवचन की कूंजी है। यह एक दुखद तथ्य है कि कवि ने इस कविता में अपनी वाक्पटुता पूरी तरह खो दी है। श्हमारे इतिहास में एक अपरिहार्य चरित्र : प्रियदर्शिनी' इंदिरा गांधी पर एक लंबी कविता है। लंबी कविता रणचंदिक के व्यक्तित्व के साथ एकजुटता को प्रकट करती है, जिन्होंने बैंकों के राष्ट्रीयकरण, उपनिवेशवाद के सामान्यीकरण और पूरी दुनिया में पूर्वी पाकिस्तान के अन्याय को उजागर करने जैसे फैसलों की एक श्रृंखला के साथ समाजवाद की ओर अग्रसर किया। यह कहते हुए कि मुझे किसी व्यक्ति पर कविता लिखना पसंद नहीं है। इस एकता ने अनिवार्य रूप से इस कविता को आकार दिया है। जैसा कि उनके राजनीतिक निर्णय ने कट्टरपंथियों के खिलाफ उनकी लड़ाई को काव्यात्मक बना दिया,

आपके युद्ध का घर पवित्र है
सभी लोग युद्ध के मैदान को जलाते रहेंगे
प्रियदर्शिनी, तुम बैठी हो
हमारे इतिहास में एक अपरिहार्य चरित्र

उसने उसके प्रति इतना ईमानदार रवैया व्यक्त किया है। अगर आपको इस कविता के निर्माण के आठ साल बाद इंदिरा जी की शहादत याद है

प्रियदर्शिनी–
तुम जागते रहो
रात दुश्मन की है

इन झुकी हुई रेखाओं की दृश्य शक्ति और भी तीव्र लग रही थी। हालांकि तुही यात्ता कंची संग्रह में उनकी सोच की सीमाएं ज्यादा नहीं बदली हैं, लेकिन अनुभव की अजीब विशेषताएँ सामने आई हैं। 'मुर्ख म्हाता–याने डोंगर हलविले' में अति–बौद्धिक कविता भावना की अभिव्यक्ति की ओर मुड़ गई प्रतीत होती है।

कवि ने संग्रह 'खेल' को जान–बूझकर सभी स्त्री–पुरुषों की अभिलाषाओं को समर्पित किया है। सूरत का सेंस ऑफ ह्यूमर मूल रूप से बहुत सचेत है। लिंग शब्दों और छवियों के माध्यम से हमारे समग्र अनुभव को व्यक्त करना उनकी कविता की वृत्ति है। हालाँकि, इस संग्रह में ऐसे शब्द चित्र नहीं हैं। कवि अलग–अलग स्तरों पर अपने और अपने प्रिय के बीच आदिम शिव शक्तिसमागम का अर्थ समझ रहा है और एक ही स्तर पर रहकर वह इस कविता में सूरत सामवेदन के दायरे से परे जाकर व्यक्त कर रहा है। कवि ने 'शुभदे तुझ नाम वीनस' या 'मुंबई, मुंबई, माझ्या प्रिय रांडा जैसी लंबी कविताओं से अप्रासंगिक विचारों के कई चक्र लिए हैं। यह एक प्रभावशाली लंबी कविता है, जो लोकगीतों की शैली को समेटती है, कहानियों को रंगती है, शिष्टता की विचित्रता का मिश्रण करती है, गद्य की ओर झुकती है, फिर भी कविता में सभी भावों की कलात्मक पारदर्शिता को धाराप्रवाह रूप से छूती है ... यह विद्रोही प्रार्थना है आधुनिक सीप।' 'मुंबई' कविता पर केशव मेश्राम ने अपनी राय दी है।

उनका संग्रह, 'या सत्तेत जिव रमत नाही', बहुत अलग शैलियों का संग्रह है। संपूर्ण मानव अस्तित्व का विचार इस कविता में व्यक्त किया गया है। उसे लगता है कि वह मानव जीवन की अपरिहार्य पीड़ा पर विचार कर रहा है। उनके कड़वे आत्मनिरीक्षण के माध्यम से आत्म–जागरूकता...

मैंने सच नहीं छुपाया
मुझे चोरी नहीं किया जा रहा है
जो कुछ भी था और है, मैंने उसे खुलकर बताया

सभी अंगों को फेंक दो
मैं गर्भ से निकलने वाले बच्चे की तरह था

इतने स्पष्ट और सीधे शब्दों में व्यक्त किया। 'मैंने सूर्य के रथ के सात घोड़ों को मार डाला–, 'मैं तुम्हारी उंगली पकड़ रहा हूं' और 'निर्वाण से पहले का दुख' इस सदी के पहले दशक की कविताओं का संग्रह है जो यह बताता है कि किस तरह ढसाल की कविताएँ अलग–अलग मोड़ लेती हैं प्रत्येक चरण।

यशवंत मनोहर कहते हैं, 'ढसाल की कविता अम्बेडकरवाद में फिट नहीं होती है। यह प्रवृत्ति अम्बेडकरवादी कविता के चेहरे को दूषित करने और अम्बेडकरवादी कविता के चेहरे को कलंकित करने की है।' उन्हें रसातल में दफनाने के लिए जल्दी करने की जरूरत नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह एक उत्तेजित छवि के कवि हैं, जो अपने पैरों को रसातल में मजबूती से लगाए हुए, एक उच्च गर्दन के साथ पृथ्वी पर रहते हैं। हमारी पीढ़ी को इस अदम्य सतर्कता पर गर्व होना चाहिए, जो एकता और शांति की खोज में, उलझन की स्थिति में है क्योंकि वह पारगमन और सार्वभौमिक दुःख का सही अर्थ समझता है।

सारांशः

ढसाल की कविता को करीब से देखने से पता चलता है कि वह एक विकासशील और परिवर्तनकारी कवि हैं। उन्होंने अपनी पूरी कविता में विचार या शैली को साँचा नहीं बनने दिया। उनके प्रत्येक संग्रह में अर्थ में उल्लेखनीय परिवर्तन होता है। उन्हें एक ऐसे कवि के रूप में इंगित किया जाना चाहिए जिसमें संवेदनाओं के नौवें दायरे की तलाश करने की सहज प्रवृत्ति के साथ पुराने प्रिय टेम्पलेट को तोड़ने का साहस और ताकत है। लेकिन इस वजह से ढसालों की सर्वशक्तिमान भूमिका, आध्यात्मिकता पर हमला और यौन संवेदनाओं का अंधाधुंध प्रदर्शन, उन्हें दलित कविता से दूर करते हुए।

संदर्भः

1. अक्षयकुमार काळे, 'नामदेव ढसाळांची कविता', साप्ताहिक साधना, फेब्रुवरी 2014.
2. नामदेव ढसाळ 'गोलपिठा' नीलकंठ प्रकाशन, पुणे, १९७५, पृष्ठ क्र. ३२
3. नामदेव ढसाळ 'या सत्तेत जीव रमत नाही', अभिजात प्रकाशन, १९९५, पृष्ठ क्र. ७४